दिनांक :- 23-05-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज हरगंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म

वैशाली में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई। प्रथम वैशाली का नगरवधु ने बुद्ध का शिष्यत्व स्वीकार किया तथा आम्र वाटिका दान में दी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई। प्रथम वैशाली में ही बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी को संघ में प्रवेश देकर भिक्षुणी संघ की शुरुआत की गई। इस के पश्चात बुद्ध कोसल राज्य की राजधानी श्रावस्ती पहुंचे

तथा वहाँ से वैशाली आये।

सबसे अधिक समय उन्होंने श्रावस्ती में बिताया! बौद्ध धर्म का सबसे अधिक प्रसार कोसल राज्य में ही हुआ। यहाँ बुद्ध ने 21 वर्षावास व्यतीत किये वे उज्जैन नहीं जा सके। महाकच्चायन के नेतृत्व में उन्होंने अवंति राज्य में अपने शिष्यों का एक दल भेजा गया।

अपने धर्मप्रचार के क्रम में समाज के सभी वर्गों से उनका संपर्क हुआ। बिंबिसार और प्रसेनजित जैसे शासकों पूर्ण सेठ अनाथपिंडक जैसे धनी व्यापारी, जीवक जैसा चिकित्सक, सुनीथ तथा वर्षकार जैसे राजकर्मचारी, अंगुलिमाल जैसे डाकू, अंबपाली जैसा गणिका, चंद्र जैसा कारीगर आदि महात्मा बुद्ध के निकट आये।

बुद्ध ने अपना आठवा वर्षाकाल भग्गों की राजधानी समसुम मारगिरी में व्यतीत किया था।

यहाँ वैद्यिकुमार उनका शिष्य बना।

महात्मा बुद्ध के शासनकाल में ही मगध ने अजातशत्रु के नेतृत्व में वैशाली पर आक्रमण किया तथा कोशल के शासक विदुधान ने शाक्यों को पराजित किया।

कोशल जनपद से ही प्रसिद्ध डाकू अंगुलीमाल का कथानक जुड़ा है। प्रारंभ में बुद्ध स्त्रियों के संघ में प्रवेश के विरोधी थी तथा उन्होंने अपनी मौसी को संघ में प्रवेश देने से मना कर दिया परंतु प्रिय शिष्य आनंद के आग्रह पर प्रजापति गौतमी को संघ में प्रवेश किया। उसी समय से भिक्षुणी संघ का अस्तित्व कायम हुआ। कपिल वस्तु से राजगृह के मध्य अनुपिय नामक स्थान पर बुद्ध ने शाक्य राजा भद्रिक का अस्तित्व कायम हुआ। अनुरुद्ध, उपालि तथा आनंद और देवदत्त को बौद्ध धर्म में दिक्षित किया।

वर्षा के मौसम को छोड़कर भगवान बुद्ध सम्पूर्ण वर्ष एक जगह से दूसरी जगह पर घूमते रहते थे। वर्षा के दिनों में बौद्ध भिक्षु एक निश्चित स्थान पर ठहर जाते थे। उन्हीं की सुविधा को ध्यान में रखकर विभिन्न श्रेष्ठियों तथा शासकों द्वारा आम्रवन का निर्माण कराया गया था। बिंबिसार द्वारा राजगृह में वेनुवन तथा आम्रवन आम्रपाली द्वारा वैशाली में : आम्रपाली वन प्रसेनजित द्वारा श्रावस्ती (महेत) पूर्वाराम विहार अनाथपिंडक द्वारा (श्रावस्ती) (सहेत) में जेतवन कुसीनारा में सालवन, सारनाथ में ऋषिपत्तन मृगदाय कौशांबी में घोषिताराम विहार उदयन ने बनवाया। लिच्छवियों ने उनके निवास के लिए महावन में प्रसिद्ध कूटाग्र शाला का निर्माण करवाया।

मृत्यु से पहले महात्मा बुद्ध का अन्तिम वर्षकाल

वैशाली में व्यतीत हुआ।

महात्मा बुद्ध ने 80 वर्ष की अवस्था में 483 वर्ष ईसा पूर्व में कुशीनगर (आधुनिक कसिया जिला देवरिया) में अपना शरीर त्याग दिया। यह घटना महापरिनिर्वाण नाम से जानी जाती है।

उनके महापरिनिर्वाण के पश्चात भस्म तथा अवशेष का विभाजन आठ भागों में किया गया जो निम्नांकित राजाओं को प्राप्त हुआ। (1) वैशाली के लिच्छवी (2) कपिलवस्तु के शाक्य (3) रामग्राम के कोलिय (4) वेठद्वीप के ब्राह्मण (5) कुशीनारा के मल्ल (6) अल्लकप्प के बुलीय (7) पिप्पलीवन के मौर्य (8) मगध का अजातशत्रु बौद्ध धर्म ने सामान्य जनों के मध्य प्रचलित चैत्य की अवधारणा को अपना लिया। महात्मा बुद्ध के अवशेष पर परिम में आठ स्तूपों का निर्माण हुआ।

प्रारंभ में हम इक्ष्वाकु वंश की परिकल्पना देखते हैं जो शैव धर्म की लिंग पूजा पर आधारित था, किंतु बाद में यह लुप्त हो गया।

गौतम बुद्ध के लिये कई उपाधियों का प्रयोग किया जाता है जैसे बुद्ध (इनलाइटेंड), तथागत (वह जिसने पा लिया हो) शाक्यमुनि (शाक्यों का गुरु)

बौद्ध दर्शन →

महात्मा बुद्ध ने बहुत ही व्यवहारिक दर्शन देने की कोशिश की है। वे आत्मा तथा ब्रह्म से संबंधित विवाद में नहीं उलझना चाहते थे। इन्होंने वैदिक धर्म में व्याप्त कुरीतियों की आलोचना की तथा पशुबलि आदि के विरुद्ध आवाज उठाई। महात्मा बुद्ध ने नवीन उत्पादन व्यवस्था का प्रत्यक्ष तथा परोक्ष समर्थन किया। इन्होंने आत्मा की सत्ता को अस्वीकार कर दिया। भारतीय धर्म के इतिहास में यह एक क्रांतिकारी कदम था। यहाँ तक कि जैन दर्शन में भी आत्मा की सत्ता को स्वीकार किया गया है।

Scanned with CamScanner

बौद्ध धर्म का मानना है कि जिसे हम एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं वस्तुतः वह भौतिक एवं मानसिक तत्वों को पांच स्कंधों से निर्मित है जैसे:

① रूप ② संज्ञा ③ वेदना ④ विज्ञान ⑤ संस्कार

इन पाँच स्कंधों का भला वर्णन मिलिन्द पन्हो के लक्खण सुत्त में हुआ है।

बौद्ध दर्शन कर्म तथा पुनर्जन्म में विश्वास करता है।

महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में जो प्रथम उपदेश दिया उसमें प्रमुख रूप से चार आर्य सत्य को प्रकाशित है।

चार आर्य सत्य है——

① दुःख यानि संसार दुःखपूर्ण है।

② दुःख समुदाय:- दुःख का कारण तृष्णा। इच्छा मोह आदि

③ दुःख निरोध दुःख से मुक्ति के लिये तृष्णा का विनाश आवश्यक है।

④ दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा! दुःख मुक्ति का रास्ता अष्टांगिक मार्ग है जिसमें आठ अंग है।